॥ अर्पण पत्रिका ॥

अनेक सद्गुणालंकृत न्यायप्रिय अनुभवशाली विद्वद्वर्य्य अनेक ज्ञानसंस्थाओं (पाठशाला) के उत्पादक श्री श्वे०स्था० जैन कॉन्फरन्स के जनरल सेक्रेटरी महामाननीय श्रीमान् सेठजी श्री अमरचंदजी साहब कि पवित्र सेवा में

ज्ञानदाता प्रेसीडेन्ट साहब.

नम्रतापूर्वक निवेदन है कि आप श्रीमान् ने ज्ञानोन्नति के लिये इस प्रान्त में सबसे प्रथम जब कि सब अपने बालकों को धार्मिक नैतिक, ज्ञान का बोध देने के लिये निद्रावश हो रहे थे यहां पर श्री० श्वे० स्था० जैन दयाधर्म पाठशाला की नींव डालकर ज्ञानप्राप्ति का सरल मार्ग किया और अबतक अनेक आपत्तियों में से बचा कर जारी रक्खी है. जिसमें प्रविष्ट होकर यत्किंचित ज्ञानाभ्यास किया वह सब आपही का प्रताप है. इतना ही नहीं, बचपन से आजतक अपने पास रख कर अनेक प्रकार के शिक्षण देरहे हैं और सब तरह मेरी उन्नति की है, इसके सिवाय जावरा, खाचरोद, मंदसोर, इन्दौर, उज्जैन, धारनगरी इत्यादि अनेक स्थलों में आप व पाठशाला की प्रबंधकारिणी ने आपकी सहमति पूर्वक पाठशालाएं स्थापित कराई है और जैन सूत्रों के गुप्त रहस्यों को स्थूल रूप से समजा देकर अनेक भव्यों की शंका समा-

धान व तत्वनिर्णय कर रहे हैं ज्ञानोन्नति की अहर्निश घटना कर रहे हैं. स्त्री शिक्षण का प्रचार अपनी समाज में बिलकुल कम देख कर स्त्रीयोपयोगी पुस्तक बनाने का निश्चय करके मुझको आज्ञा की. तदानुसार यह स्त्री-योपयोगी सूचना रूप प्राथमिक शिक्षण की लघु पुस्तक आपको समर्पण करता हूं.

मैं हुं,

आपका पूर्ण आभारी,

श्री० श्वे० स्था० जैन दयाधर्म पाठशाला

रतलाम का विद्यार्थी.

* प्रस्तावना *

वर्त्तमान समय में कई महाशय अपनी स्थिति का अवलोकन करके उसका सुधारा करने, उन्नति के उपाय सोचने एवं प्राप्त करने के लिये कटिवद्ध होकर प्रयास कर-रहे हैं. वड़ी २ सभाएं, कॉन्फरेन्सें, सोसायटीएं, पाठशालाएं, स्कूल, कॉलेजादि अनेक उन्नति के साधन प्रचलित कररहे हैं. और हजारों, लाखों, क्रोड़ों रुपये इनके पीछे व्यय कररहे हैं. इतना ही नहीं साथ में तन, मन और समय का भी पूर्ण रूप से उपभोग दे-रहे हैं. यह साधन अलवत्ता उनकी अभि-वृद्धि के कारण भूत हैं. तथापि चाहिये वैसी साफल्यता प्राप्त न हुई. इसका कारण मुख्य यह है कि हमारा सहचारी- वर्ग (स्त्रियें) के तरफ वे दरकार रहे हैं।

स्त्रियें इस संसार रूप चक्र का दूसरा पैया है. मनुष्यों का दूसरा हाथ एवं पांव हैं: राज्यशासन में प्रधान है।

धान व तत्वनिर्णय कर रहे हैं ज्ञानोन्नति की अहर्निश घटना कर रहे हैं. स्त्री शिक्षण का प्रचार अपनी समाज में बिलकुल कम देख कर स्त्रीयोपयोगी पुस्तक बनाने का निश्चय करके मुझको आज्ञा की. तदानुसार यह स्त्रीयोपयोगी सूचना रूप प्राथमिक शिक्षण की लघु पुस्तक आपको समर्पण करता हुं.

मैं हुं,

आपका पूर्ण आभारी,

श्री० श्वे०स्था० जैन दयाधर्म पाठशाला

रतलाम का विद्यार्थी.

होती है. ऐसा नीतिकार चाणक्य ऋषि का मत है। कहा है किः—

अनृतं साहसं माया, मूर्खत्व माति लोभता।
अशौचित्वं निर्दयत्वं, स्त्रीणांदोषाः स्वभावजा॥१॥

अतः मेरा उस हद तक नहीं किन्तु स्त्रियें अपना धर्म कर्म व्यवहार को समझ कर नीति रीति में प्रवर्ते और खुद का मनुष्यावतार साफल्य करके हमको लौकिक लोकोत्तर के कार्य्यों में सहायकारी होकर उनको कुदरत से मिले हुवे अर्धांगी सहचारिणी गृह स्वामिनी आदि पदों को सोभाप्रद करे।

समय का परिवर्तन के साथ स्त्रीयोपयोगी अनेक प्रकार के उत्तम २ ग्रंथ समर्थ विद्वानों ने रचे हैं. परन्तु कई ग्रन्थ तो इतने विद्वता पूर्ण हैं कि हाल की अल्पज्ञ स्त्रियों का उनका अध्ययन करना व समझना वहुत ही कठिन है और कितनेक सरल हैं वे विस्तार युक्त ज्यादा होने से व कीमत अधिक वढने से वहुत सी साधारण स्त्रियें

उनका लाभ लेने से वञ्चित (दूर) रहती हैं अतः उन सामान्य शिक्षा रहित आर्य्य ललनाओं एवं कन्याओं के हितार्थ अनुभव शाली, वयो वृद्ध, विद्वान, विचारशील सेठ जी श्री अमरचन्दजी साहब ने एक स्त्रीयोपयोगी छोटी सी पुस्तक प्रकट होने की आवश्यक्ता दर्शा कर कितनीही उपयोगी सूचना फरमाई तदानुसार यह पुस्तक मैंने तय्यार की है।

आशा है कि आर्य्य रमणी गण इस हित शिक्षा रूप माला को सादर स्वीकार करके मेरे श्रम को साफल्य करके मेरे को और भी लेख लिखने के लिये उत्साहित बनावेंगी. किं बहुना।

भवदीय

एक विद्यार्थी

श्री श्वे० सा० जैन दयाधर्म पाठशाला

(रतलाम)

॥ ॐ श्रीवीतरागायनमोनमः ॥

मंगलाचरण ।

प्रणम्य श्री महावीरं, गौतमं च गणाधिपम् ।
नाना ग्रन्थोद्भृतंवक्ष्ये, नारी धर्म समुच्चयम्॥

प्रथम मैं अपने इष्टदेव शासननायक श्री महावीर प्रभु को व गौतमादि गणधर देवों को नमस्कार करके स्त्रीयोपयोगी अनेक ग्रंथों में से ग्रहण कर स्त्री सुविचार माला नाम ग्रन्थ का प्रारम्भ करता हूं ।

परिवर्त्तिनि संसारे, मृतः को वा न जायते ।
सजातो येन जातेन, यातिवंशः समुन्नतिम्॥१॥

आर्य्य भगिनिओं ! रात और दिवस करके सुख और दुःख करके जन्म और मृत्यू करके चक्रवत् परिवर्तन करनेवाले इस असार संसार में कौन न जन्मा और कौन न मरा अर्थात् सब प्राणी जन्म के मर जाते हैं, किन्तु जन्म उनका ही सफल है जिनके अस्तित्व से जाति, कुल, देश

और धर्म्म उन्नति को प्राप्त हो अर्थात् जिन्होंने जगत् का उद्धार किया हो ऐसे नर रत्न ऋषभदेव स्वामी से महावीर प्रभु पर्यंत २४ तीर्थंकर महाराज चक्रवर्ती वासुदेव वलदेव बड़े २ महात्मा, बड़े २ ऋषि, राजा. महाराजा, इत्यादि अनेक अवतारी पुरुष हुवे हैं उनको भी जन्म देने का मान स्त्री वर्ग को ही है हाल में श्रीमान्, धीमान्. राजा. महाराजा, ऋषीश्वर, महात्मा, जनहितैषी. परोपकारी अनेक नररत्न विद्यमान् ही है जिनको वे नरोत्तम भी नमस्कार करते हैं और उनके कारण से इन्द्रादिक देवों ने भी जिनको नमन किया है आज उस वर्ग (स्त्री जाति) की कैसी शोचनीय स्थिति हो गई है कि जिसका चितार देते हुवे हृदय दुखित होता है. आर्य्य महिलाओ! प्रायः तुम अज्ञान और मूर्ख होने के कारण हरेक तुमारे तरफ अपमान और दासत्व की नजर से देखने और वर्ताव करने लग गये हैं और तुम में से विद्या, हुन्नर, धर्म, कर्म

आदि करके वर्जित कितनीक जो गरीब होती हैं वे तो केवल मिहनत मजदूरी कर के जो निर्वाह हो जावे तो अपनी जिंदगी को सफल समझ लेती है और जो धनाढ्य होती हैं वे खान पान, ऐश आराम, मर्यादा विरुद्ध ओढने, पहिरने, अयुक्त सणगार सजने अभिमान के भार से छककर घर के मनुष्यों व नोकरों पर असभ्य हुक्म करने, त्रास देने आदि में अपनी अमूल्य जिन्दगी खो देती है, परन्तु वास्तव में जातिवंत कुलवंत स्त्रियों को (देवताओं को भी दुर्लभ ऐसे) प्राप्त हुवे मानव जन्म. में अपने धर्म, कर्म, नीति, रीति अनुसार किस तरह प्रवृति करना कि जिससे लौकिक में सुख सम्पति और उपभोगादि सामग्री की प्राप्ति व अचल कीर्ति का लाभ हो और परलोक में अक्षय सुख की प्राप्ति हो. यह संक्षेप रूप से इस पुस्तक में बताऊंगा।

प्रथम तो मनुष्य का जन्म ही प्राप्त होना मुश्किल है, जो सर्व साधारण

हैं वास्ते यहां पर इस विषय का अधिक बर्णन करना समयोचित नहीं जान कर संक्षेप में कहना होता है कि यह जन्म प्राप्त करते हुए भी जिन्होंने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पदार्थों की प्राप्ति के लिये उद्योग नहीं किया उनका जन्म बकरी के गलस्तन (गले में लटकते हुवे आंचल) वत् निरर्थक है. ऐसा नीतिकार कहते हैं. किन्तु इन चारों की प्राप्ति का कारण मुख्य धर्म है क्योंकि पूर्व भव में जिसने धर्म संचय किया होगा उसीको अर्थ याने धन काम याने सांसारिक उपभोग और अंत में मोक्ष की प्राप्ति होगी. इस लिये धर्म की पहले दरजे जरूरत है ।

धर्म शब्द के अनेक आशय से अनेक भेद हैं किन्तु यहां पर मैं धर्म को मुख्य दो भेदों में विवेचन करूंगा याने नैतिक धर्म और आत्मिक धर्म जिससे ऊपर कहे हुवे अर्थ और काम की प्राप्ति के कारणों का समावेश नैतिक धर्म की व्याख्या में और

मोक्ष की प्राप्ति के कारणों का समावेश आत्मिक धर्म की व्याख्या में किया जावेगा. नैतिक धर्म उसको कहते हैं जिसमें मर्य्यादा युक्त प्रवृत्ति की जाय जिससे इस लोक में अपकीर्ति नहीं हो और परलोक में जिसकी गती नहीं बिगड़े। नैतिक धर्म यह आत्मिक धर्म की प्राप्ति का सुमार्ग है जिसके अनुगमन से आत्मिक धर्म सरलता से प्राप्त हो सके।

आत्मिक धर्म जो अपनी आत्मा के शुद्ध स्वरूप को प्राप्त होकर सर्व आधि व्याधि उपाधि के दुख से छुट जाना।

इन दोनों धर्मों में से पहले मैं नैतिक धर्म की व्याख्या करूंगा कि जिसकी आज पूर्ण आवश्यक्ता दिखाई देती है बहुत सी स्त्रियें नैतिक धर्म के अभाव से मूर्ख अविवेकी अबला दासी आदि अनुचित पदों को धारण करके लोक निंदा की पात्र बन रही है और अब समय के परिवर्तन के साथ इनकी यह स्थिति रहना महान् हानि

कारक है वास्ते संक्षेप में कुछ वर्णन करता हूं।

नैतिक धर्म का शिक्षण. स्त्रियों को जैसे बाल्यावस्था में लाभदायक होता है वैसा दूसरी वय में नहीं होता है. इसका कारण यह है कि हरेक को बाल्यावस्था में नवीन सीखने की उमंग रहती है इसलिये वे उस अवस्था में जैसा अनुभव लेती है जैसा शिक्षण मिलता है वैसा ही ग्रहण करके उस मुताबिक उसकी प्रणति व रुची हो जाती है अतः उनको बाल्यावस्था में नैतिक धर्म का सद्बोध दिया जाय तो उसी तरह उनकी जिंदगी नीति मय उद्योगी व कर्तव्य परायणता में गुजरेगी. इसलिये उनके माता पितादि वारिशों को उचित है कि वे खूब तपास रख कर ऐसे संयोगों व साधनों की प्राप्ति के लिये कौशिश करते रहें व जिन संयोगों व और साधनों से बालकों की प्रणत्ति विगड़े ऐसे साधनों का निराकरण करें।

बाल्यावस्था में लड़कियों को कौनसी कौनसी बाबतों का शिक्षण मिलना चाहिये. कि जिसको अङ्गीकार करके अपनी जिंदगी को सुखमयी बनावे उनका विवेचन करता हूं

(१) स्त्रियों को अपनी तमाम जिन्दगी पुरुषों के आधीन रहकर गुजारनी पड़ती हैः स्त्री किसी अवस्था में भी स्वतन्त्र नहीं है और न स्वतन्त्र रहना उचित है, अतः उनकी प्रीति सम्पादन करने के वास्ते.

(क) तुम हमेशः पीयर में मात पिता, व सासरे में सासु सुसरा आदि बड़ों को प्रातः उठते ही नमन किया करो.

(ख) अपने से बड़े (माता, पिता, भाई, सास, सुसरा, पति आदि) जो आज्ञा करे उसको सहर्ष प्रमाण करके उसी मुताबिक कार्य्य करो जिससे वह तुमारे ऊपर प्रसन्न रहकर तुम्हारे हित व आबादि का प्रयत्न करेंगे.

(ग) जिस कार्य्य के करने को तुम्हारे वडील मना करें वह चाहे अच्छा और लाभ-

दायक भी तुमको मालुम देता हो तो भी हठ करके मत करो. किन्तु थोड़े समय वाद मौके से उनकी आज्ञा पाकर करो जिससे काम भी हो और वे नाराज भी नहीं हो.

(२) गृह संसार सुव्यवस्थित रहने का सर्व आधार स्त्रियों की वुद्धिमानी और चातुरी के ऊपर हैं क्योंकि पुरुषों के ऊपर द्रव्य पैदायश करने का भार कुछ कम नहीं है जव वाहर जाकर द्रव्य पैदायश की चिन्ता और घर में आकर गृह प्रवंध की चिन्ता पुरुषों को करना भाग पड़े तो ऐसी कौन जगह है जहां उनकी तवीयत को शान्ति मिले. वास्ते पूर्वजों ने यह भार स्त्रियों पर रक्खा है. परंतु गृह संसार को उत्तम वनाना हरएक स्त्रियें नहीं कर सक्ती है. वास्ते उसको वुद्धिमान् और चतुर होने के लिये विद्या सीखने की खास आवश्यक्ता है.

वहुतसी स्त्रियें ऐसा कहती है कि विद्या पढ़कर हमें कोई राज्य करना है या कोई

हाकमी करना है यह उनका कथन अविचार युक्त है क्योंकि गृह संसार भी एक प्रकार का राज्य ही है जिसकी सुव्यवस्था रखने के कारण ही गृहिणी गृहस्वामिनी इत्यादि पदवियें मिली हैं.

पूर्व की स्त्रियों के कथन सुनते हैं तो हरएक के साथ ६४ कला की जाणकार का विशेषण दिखाई देता है. जिसमें अनेक प्रकार की विद्या है इसपर से सिद्ध होता है कि पूर्वकी स्त्रियें विद्याभ्यास करती थी वास्ते तुमको भी चाहिये कि ज्यादा नहीं बने तो भी

(क) सामान्य तौर से लिखना और पढ़ना अच्छी तरह कर सके इतना तो अभ्यास अवश्य करो.

(ख) नीति के अनेक ग्रन्थ विद्वानोंके रचे हुवे हैं उनको भी पढ़ना जरूरी है जिससे अनेक प्रकार के अनुभव मिले, दुर्गुण दूर हो और धर्म कर्म तरफ प्रीति बढ़े.

(ग) आजकल बहुत पुस्तकें ऐसी प्रचलित होगई हैं जिनके पढ़ने से उद्धता प्राप्त

हो धर्म से श्रद्धा हटे और खराव २ अनुचित विचार पैदा होकर विषय विकार की वृद्धि हो उनको बिलकुल त्याग करना उचित है.

(३) भोजन जो मनुष्य के जीवन का आधार है वह कार्य्य भी स्त्रियों के ऊपर ही रक्खा हुवा है. जो स्त्रियें इस कला को अच्छी तरह जानती हैं वे थोड़े खर्च और मामूली सामान से भी उत्तम रुचिकर भोजन बना लेती हैं और जो स्त्रियें यह कला नहीं जानती वे ज्यादा खर्च और अच्छा सामान से भी अच्छा भोजन नहीं बनासक्ती हैं जिससे हमें थोड़े २ काम के लिये व रसेन्द्री का पोषण के लिये हलवाइयों की भट्टियें ताकनी पड़ती है वास्ते स्त्रियों को भोजनकला बाल्यावस्था से ही सीखना चाहिये. इस कला के लिये कोई स्कूल पाठशालायें नहीं है कि जहां जाकर अभ्यास किया जावें. यह कला घर में ही अपनी माता व सुघड़ स्त्रियों से सीखना जरूरी है जो लड़कियें खेल कूद में रहकर इस तरफ लक्ष

नहीं देती व उनके मात पिता ध्यान दे कर उनको इसका महावरा नहीं कराते हैं वे वड़ी होने पर बहुत पश्चाताप करती है और कहीं भी उनका आदर नहीं होता है वास्ते वाल्यावस्था में ही उद्योग करना जरूरी है.

(४) भोजन वनाने के साथ भोजन करने व कराने का भी पूरा विचार रखना चाहिये यह भी स्त्रियों को बहुत लाभदायक है. अस्वस्थ और अनियमित भोजन करने से व कराने से बहुत हानि होती है वास्ते निम्नलिखित बाबतों को स्मरण में रक्खें. और भोजन के काम में तथा भोजन के साथ उपभोग में आने वाले पदार्थ तय्यार करने का महावरा भी वाल्यावस्था में ही करना चाहिये जैसे वड़ियें, पापड़, आचार आदि.

(१) जिस चीज के खानें को माता पितादि वडील मना करे वह मत खाओ.

(२) एक वक्त का आहार जबतक नहीं पच जावें तबतक दूसरी वक्त आहार करना उचित नहीं है.

(३) ज्यादा भोजन करने से कोई बलवान् नहीं होता परन्तु ज्यादा पचाने से जरूर बलवान् होता है.

(४) कैसाही स्वादकारी और अच्छा भोजन क्यों नहीं परन्तु विना भूख लगे खाने से विकार और रोग करता है.

(५) भोजन को अच्छी तरह चावकर खाना चाहिये निगलने से नुकशान करता है.

(६) इतना गरम भोजन भी नहीं खाना कैं जिससे हाथ और मुंह दोनों जलते जाय

(७) विदेश में किसी अनजान मनुष्य और शत्रु के हाथ का भोजन नहीं करना क्योंकि कई दुष्ट लोग नशे और जहरीली चीजें दे देते हैं.

(५) शरीर रक्षा के लिये भोजन सिवाय और भी कई बावतों का विचार रखना जरूरी है क्योंकि आजकल अनेक रोग, पीड़ा. यौवनावस्था में वुढ़ापे का दिखाव अकाल मृत्यु आदि बहुत देखने में आते

हैं इसका कारण देह रक्षा की उपयोगी वाबतों पर दुर्भाव है वास्ते इन उपर कहे हुवे दुःखों से वचना चाहो तो निम्नलिखित वावतों पर ध्यान दो.

(१) जल (पाणी) जो गन्धिला भारी और उघाड़े ठाम में पड़ा हो उसका वचाव करो व जलकी मटकियें घड़े आदि खुले मत रक्खो.

(२) निद्रा–वहुत लेने से आलसी होने के सिवाय कई प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं और ज्यादा उजागरा करने से भी हानि होती है वास्ते ६-७ घंटे से ज्यादा निद्रा लेना उचित नहीं और सूर्योदय बाद सोते रहना भी दरिद्री का काम है

(३) कसरत भी देह रक्षा का एक अंग है. यह आज की स्त्रीयें भली प्रकार नहीं जानती हैं और कसरत शब्द से ही चौंक उठती है परन्तु कूद, फाँद, दौड़ वेठक, वगैरा को ही क़सरत नहीं सम-

फना चाहिये परन्तु गृह कार्यों में परिश्रम करना (हरेक वस्तु घर में ही तैयार करना वगैरा.) यह भी एक प्रकार की कसरत है प्रायः धनाढ्य स्त्रीयें बीमार रहतीं हैं उसका एक कारण यह भी है कि वे न कुछ परिश्रम करती हैं न ज्यादा फीरती हैं इससे उन को वस्तु अच्छी तयार नहीं रहने से खर्च भी अधिक लगता है और कुटुम्बपरिवार व ज्ञातिजनों में उनका प्रभाव नहीं रहता. वास्ते हरेक स्त्रियों को उचित है कि अपनी तन्दुरस्ती के लिये परिश्रम करें और अपने स्वजनों में दुःख सुख आदि की संभाल के लिये व देव दर्शण आदि को कुल की मर्याद युक्त जाने की अवश्य क्रिया करती रहें.

(४) वस्त्र भी शुद्ध और गर्मी सर्दी आदि ऋतुओं की अनुकूलतानुसार रखने चाहिये परन्तु जिन वस्त्रों से लौकिक बुरा कहें ऐसे वस्त्र को वर्जना चाहिये

(५) स्वच्छता भी देह रक्षा का साधन है क्योंकि अधिक मलीनता मन को बिगाड़ती है वास्ते मलीनता को त्याग कर के शरीर स्वच्छ रखना जरूरी है.

(६) गृह निवास भी साफ हवादार और कीचड़ बदबुह से बचाकर रखना चाहिये.

(७) मन भी आनन्दी और चिन्ता रहित रखने से मानसिक और असाध्य रोगों का बचाव होता है. कारण जो हमेश ज्यादा क्रोधी, लालचु, ईर्षालु कायर (डरकण) होती है उसका शरीर जल्दी नहीं सुधरता है वह थोडे को भी ज्यादा बदा लेती है और चिन्ताग्नी में दहन होकर शरीर को भी क्षीण कर देती है वास्ते तुम सुखी रहना चाहो तो मन को हमेश प्रसन्न और आनन्दी रखो.

(८) अधिक परिश्रम कर के व मार्ग से चलकर एक दम कपड़े उतारना व

पानी पीना रोग की वृद्धि करता है वास्ते विवेक रखना चाहिये.

(९) वर्षाऋतु में ज्यादा पवन लगने से बचाव करना चाहिये क्योंकि यह पवन आगे पर पीड़ा करता है.

(१०) बिगर सोचे विचारे बिना तसल्ली हरतरह की ज्यादा औषधी करने से भी देह का बिगाड़ा होता है.

(११) तुम को या किसी को कोई प्रकार का रोग हो तो किसी चतुर वैद्य डाक्टरों का इलाज करो. कराओ परन्तु ज्यादातर झाड़ा फूंकी व मंत्र यंत्र टामण टोटकाओं की जाल में फसना उचित नहीं है.

(६) तुम को सरीर रक्षा के साथ २ अपनी आबादी और जिन्दगी सुखमयी बनाने के लिये भी ध्यान देना चाहिये. क्योंकि मनुष्य की सदा सर्वदा एकही दशा नहीं बनी रहती है वास्ते कुछ हुन्नर इस अवस्था में अवश्य सीखलो. जैसे सीना,

गूंथना, चित्रकारी, भरतकाम, कसीदे इत्यादि, जिसमें न ज्यादा पाप है न तनतोड़ मिहनत करनी पड़ती, जिससे सम्पती में तो तुम्हारा फिजूल खर्चा बचे, चतुर कहलाओ और वक्त मौके पर अटकी न रहो. और विपत्ती की हालत से सुगमता पूर्वक अपना निर्वाह कर सको.

आजकल बहुतसी लड़कियें खेलकूद में रहकर कुछ हुन्नर नहीं सीखती. वे आफत के समय पानी, पीसना वगैरा तनतोड़ मिहनत करने पर भी सुख से अपना निर्वाह नहीं कर सक्ती है, दूसरों की ओसियारी रहती है और अपने उच्च जाति कुल का अभिमान छोड़कर अधमजनों की भी दीनता करनी पड़ती है.

(७) यह बात भी मनन करने की है कि जो तुम हमेशः सुखी रहना चाहो तो अपने घर की आमद और खर्च का हमेशः पूरा ध्यान रक्खो और जितनी आमद हो उससे कम खर्च करो किन्तु ज्यादे कभी मत

करो, जो स्त्री इसबात को भूलकर अपनी सोभा सणगार व घर के काम में जरूरत से ज्यादा खर्च करेगी और करकसर करके कुछ द्रव्य इकट्ठा नहीं करेगी उसे कोई वक्त वहुत पश्चाताप करना पड़ेगा. क्योंकि आफत आने पर पैसा होगा जबही कोई तुम्हारी सहाय करेगा. बिन पैसे माता पिता और बहुत नजदीक के सम्बन्ध वाले भी छोड़ देते हैं वास्ते.

(१) जो २ काम तुम सहज विना ज्यादे मुश्किली के करसक्ती हो वह खुद कर लिया करो.

(२) खाने पीने के पदार्थ घर में ही तैयार होने से रकम अच्छी बने, खर्च ज्यादा नहीं बैठे और बरकत दीखे.

(३) कपड़े आदि अपने हाथ से बनाने में इच्छानुसार बना सको, कपड़ा ज्यादा नहीं बीगड़े और द्रव्य बचे.

(४) आज कल पाश्चिमात्य देश की तरह २ की मनोरञ्जन चीजें बहुत फैलगई हैं

अपनी स्थिति के परमाण से विना जरूरत ज्यादा खरीद कर व्यर्थ खर्च न करो.

(८) विवाह होना यह सांसारिक अवस्था का एक कुदरती नियम है, आजकल यह एक प्रकार का खेल और माता, पिता की मनोकामना पूर्ण करने का (पैसा लेकर स्वार्थ साधने अथवा धनाढ्य घरों में खर्च करके मौज सौख लूटने का) धाम होगया है जो उनकी इच्छानुसार बालकों की अवस्था का व वर कन्या की योग्यता का खयाल किये विदून कर देते हैं जो उन कन्याओं का हौंसला न होते हुवे तथा विवाह के उद्देश्य को न समझते हुवे भी संसारचक्र की परिक्रमा में आकर परतंत्रता की वेड़ी में पड़ के दूसरे घर में अपनी जिन्दगी पूर्ण करनी पड़ती है. अतः दूसरे घर में जाकर उन अपरिचित लोगों की प्रेमपात्र किस तरह बनना इसका शिक्षण भी बाल्यावस्था में मिलजाने से वह जिंदगी

सुखमय गुजार सकेगी. वास्ते लज्जा, मृदुता, सौम्यता, धैर्य्यता, गम्भीरता, उद्योगी और मिलनसार आदि गुणों को धारण करके निम्नलिखित रीति से प्रवर्तोगीतो जरूर तुम घर के मनुष्यों की प्रेमपात्र वनकर अपनी जिन्दगी सुखमय गुजारोगी.

(१) सासरा पत्ते के हरेक वड़े छोटे की योग्य लज्जा मर्यादा रक्खो.

(२) सासु, सुसरा और वडीलों को (जो घर में हों) हमेशः उठकर पायवंदन किये करो और वे जो हुक्म देवें या चाहे वैसा काम करो, किन्तु मना करे ऐसा मत करो.

(३) जो कोई सम्बन्धी स्त्री घर पर आवे अथवा तुम उनके घर जाओ या रास्ते में मिले तो पायवन्दन आदि नम्रता का व्यवहार जरूर साधो.

(४) अपनी नन्द, दोराणी, जिठाणी वगेरा से कभी हुज्जत या तकरार मत करो किन्तु हिलामिल के सम्प से रहो और कभी उनसे छलबल कपटाइयें न करो.

(५) अपनी देवराणी, जिठाणी या नन्द में कोई चूक होजावे या काम बराबर नहीं करे तो तुम उनको सहायता देकर करादो किन्तु सासु आदि वडीलों के आगे उनकी चुगलियां निन्दा मतकरो.

(६) तुम हमेशः सावचेत रहके वर्ताव करो परंतु ऐसा काम मतकरो जिससे तुम्हारी चुगलियां निन्दा करने का प्रसंग उन को मिले.

(७) कदाचित् दैववशात् कोई अनुचित काम या गलती तुम से वन जावे तो अपनी सासु आदि वडीलों को तुम खुद जाकर या उनके पूछने प सत्य २ और साफ साफ हकीकत कहदो जिससे वह उसको सुधार तुम्हारी निन्दा आगे नहीं वढ़ने देंगे और उनका प्रेम भी तुम्हारे पर कम न होगा और जो ऐब को छिपाओगे या छलवल करोगे तो उनका प्रेम घट जावेगा और वे हमेश के लिये तुम्हारा विश्वास न करेंगे.

(८) भोजन वस्त्र व कामकाज में अपने देवर ज्येष्ठ और पति में किसी तरह भिन्नभाव न रखते सबका बराबर सत्कार करो.

(९) कोई भी ठंडी, बासी वस्तु ? अवगुण? हो उसको न खाने दो.

(१०) भोजन बनाओ वह बड़ी सावधानी और चतुराई के साथ व समय मौका विचार के बनाने चाहिये जो सब रुचि पूर्वक जीम लेवें.

(११) भोजन खाने की आदत पीयर के मुताबिक यहां नहीं रखना चाहिये किन्तु जो वक्त पर मिले वही रुचि के साथ खाय लिये करो नहींतो भूखे मरोगी और दूसरे तुमको बखोड़ेंगे.

(१२) काम फुरती के साथ और चतुराई से करो जिससे खुद का फायदा हो और लोग प्रशंसा करे.

(१३) तुमारे व घर के मनुष्यों के आभूषण व वस्त्रों को बिखरे हुवे नहीं रखते

ऐसे जापते से रक्खो कि जो खराब नहीं हो और मकान साफ दीखे,

(१४) हर एक आज के काम को आलस्य से कल पर मत छोड़ो व दूसरों पर मत डालो क्योंकि जैसा तुम कर सकोगी वैसा दूसरा नहीं करेगा,

(१५) जो कभी पुत्र, पुत्री, बहु या नोकरों ने किसी प्रकार का नुकसान कर दीया हो अथवा हुक्म नहीं माना हो तो इतना गुस्सा उन पर मत करो जिससे वह त्रास पावे जो मौका पाकर करना पड़े तो थोड़े वक्त बाद पीछे विश्वास लिये करो, जिससे वे दूसरे काम का विगाड़ा न करे.

(१६) जो किसी ने अनुचित काम कर लिया हो तो उसको विश्वास करके भूल वता देना चाहिये परन्तु द्वेष बुद्धि से लोगों में जाहिर करने से व हरवक्त ताना मारने से वह सेर होकर काबु से वाहर चला जाता है.

(६] स्त्री को सुखी और सौभाग्य सम्पन्न होने का आधार पति की प्रेम द्रष्टी सम्पादन करने पर है क्योंकि जिस स्त्री के उपर पति का प्रेम नहीं है उसका जीवन शून्य घर के दीपक समान निरर्थक है.

आज कल कितनीक वावली मूर्ख स्त्रीयें पति को वश में करने के लिये योगी, यति, सन्यासी बावा, फकीरों के पास जाकर उन से उपाय पुछती हैं और टोटके टामण कराती व्रतादिक करती हैं किन्तु इन कार्य्यों से वह पति के निर्मल शुद्ध प्रेम को गुमा कर नर्क-गामी होती है और अनेक विपतियें उठाकर दुखी हो जाति हैं.

सत् पुरुषों ने पति को वश में करने के लिये एक उमदा वृत वतलाया है जो दूसरे सबी उपायों से प्रधान है, इससे पति ऐसे प्रसन्न होजाते हैं कि जो अनुभव से ही मालुम हो. वह जो कुछ हो एक पतिव्रत है यह जैसा उत्तम श्रेष्ट वशीकरण है वैसा ही कठीन और दुस्तर है. जमाने हाल में बहुत

सी स्त्रियें सती पवित्रात्माजरूर हैं परन्तु सचमुच पतिव्रता तो सेकड़ों वल्कि हजारों में गिनती की ही मीलेगी. मेरा कथन यह है कि जो तुम पति को वश करके अपनी जिन्दगी आनन्दमयी वनाना चाहो तो पति व्रता वनने की कोशिश करो जिसकी थोड़ी वातें यहां वतलाता हूं.

(क) पति को देव समान समझना उनकी भक्ति करना.

(ख) पति के हुक्म को पालन करो. (चाहे अपनी मर्जी विरुद्ध भी क्यों न हो)

(ग) पति के भवन में पधारे पहिले सोना नहीं. कदाचित् काम काज के थाक से निद्रा सतावे तो अलग सोजाना परन्तु जव पति आवे उठके योग्य सत्कार करना.

(घ) पति के पधारने पर जल पान आदि से व मिष्ट वचन से उनके चित्त को प्रसन्न करना.

(च) अपनी स्थिति का खयाल नहीं करते हुवे दूसरे के देखादेख अपने गहने कपड़ो के लिये हठ करके उनको दिक्क करना नहीं, क्योंकि तुमारा सौभाग्य और प्रशंसापति की प्रीति पर है परन्तु गहने कपड़े में नहीं है.

(छः) जव पति संसार के भार से खेद खीन्न होकर घर आवे भोजन पान करे अथवा अप्रसन्न चित हो उस मोके पर मधुर वचन द्वारा हास्य और आनन्द की बातों सें उनके चित्त को शान्त करना परन्तु अपनी पराई कुथली, या झगड़े टंटे की बातें या संसारिक व्यय-साय की चिजों के लिये सताना नहीं ।

इत्यादि वर्ताव करने से तुमारे सासरा पक्ष के सबी लोग तुमारे उपर वड़े प्रसन्न रह कर तुमारी आवादी के लिये पूर्ण प्रयत्न करेंगे और तुमारे पति भी तुम से खुश रहगे ॥

(१०) सिणगार भी स्त्रियों का एक मुख्य कर्म है और सौभाग्य का लक्षण है परन्तु आज कल सणगार की प्रवृत्ति बहुत ही विपरीत होगई है जिससे वगैर वाकबी के यह उत्तम कुलांगना है। ऐसा अनुमान करना भी कठीन हो गया वास्ते उत्तम कुल-वान स्त्रियों को अपने जाति कुलके अनुसार पेहराव ओढाव रखना चाहिये भाल में टिंकी नाक में नथ, पांव में विछी इत्यादि भूषण योग्य और सोभाग्य सूचक है॥

(११) तुम हमेश गुण ग्राही बनो प्र-रन्तु दूसरों के अवगुण तरफ ध्यान मत दो

(१२) अपने पड़ोसियों और सगे स्नेहियों से हमेशः मेल मीलाप और प्री-तिरक्खो और उनके सुख दुःख की भागी बनो जिससे सब तुमको चावे और तुमारे सुख दुःख में यह भी शामिल रहे॥

(१३) तुम हमेशः उद्योगी और सहन-शील बनकर हरेक कार्य्य में प्रयत्न करती रहो परन्तु भाग्य के उपर ही रहकर उद्योग

को मत छोड़ो क्योंकि उद्योग ही सब सुखों का दाता है परन्तु उद्योग करते भी जो कार्य्य सिद्धि नहीं हो तो भाग्य पर आकर उसके संकल्प विकल्प और क्लेश नहीं करना।

(१४) प्रसव भी स्त्रियों का सोभाग्य प्रतिष्ठा और सांसारिक अवस्था का कुदरती कर्म है। जिस स्त्री को सन्तान प्राप्ति नहीं होती वे अपने मनमें अनेक तरह की चिन्ता करती वे अपने को अभागिनी समझती है; परन्तु आजकल की स्त्रियें गर्भावस्था व प्रसव के नियम से अजान रहने के कारण सन्तान की हानि अथवा रोगी होने आदि की अनेक पीड़ाएं उठाती है.

आज कल हिन्द में बालकों की अधिक मृत्यु बढ़ जाने के कारणों में मुख्य कारण माता की बेदरकारी ही विद्वान लोग बताते हैं. और यह कितनेक अंश सत्य भी है. स्त्रियों को चाहिये कि वे इस बाबत में पूरी सावचेती और खबरदारी रक्खे. क्योंकि जगतकी आबादी का आधार तुम्हारी सन्तान

की रक्षा व शिक्षा पर है. जो सन्तान निरोगी, बलिष्ठ, चिरायु, शिक्षित और बुद्धिमान् होगा, तो तुमको भी यश दिलावेगा. और आप भी अपनी फर्ज अदा करेगा. और जो रोगी, दुर्बल, अल्पायु और अशिक्षित होगा तो जन्मा ही निजन्मा उलटा मूर्ख, अविवेकी, अवनीत, दुःशील और अनाचारी होकर मात पिता को दुःखदायी होजाता है. वास्ते हरेक स्त्री का फर्ज है कि उपरोक्त रक्षा व शिक्षा के बारे में निम्नोक्त शिक्षा पर खूब ध्यान देवें वास्ते नीचे लिखी हुई बाबतें तुमको गर्भावस्था में ध्यान में रखनी चाहिये.

(१) गर्भिणी स्त्री को ज्यादा परिश्रम से बचाव करना चाहिये परन्तु बिलकुल आलशीपण भी रखना उचित नहीं.

(२) गर्भिणी स्त्री को खट्टा, खारा, तीक्ष्ण आदि विकारी पदार्थ भी खाना उचित नहीं है. बहुतसी स्त्रियें अपनी जबान को वश में नहीं रखती वे खुद तकलीफ

पाती है. और बालक के हकमें भी पूरा नुकसान करती है, एक पुस्तक में ऐसा लिखा है कि पेट में जो कीड़े आदि क्षुद्रिक जीव होते हैं वे बालक को हमेशः काटते व सताते रहते हैं. और उपर वह विकारी भोजन जानेसे उस बालक को असह्य वेदना उठानी पड़ती है जैसे दुखको घाव पर नमक डालने से होती है.

(३) गर्भवती को ज्यादा फिरने से शीत व उष्ण से बचाव रखना चाहिये क्यों-कि इससे गर्भपात आदि महान् दोष प्राप्त होते हैं.

(४) गर्भवती को काम चेष्टा भी त्यागन करना चाहिये क्योंकि इससे गर्भ को महान् कष्ट होता है.

(५) गर्भिणी को ज्यादा वक्त होने पर (गर्भ के ज्यादा बढ़ने पर) बाहर गांव जाना उचित नहीं है यदि आवश्यकीय कारण लेजाना पड़े तो ज्यादा धक्का पड़े ऐसे

मार्ग व गाड़ी घोड़ा आदि का बचाव करना चाहिये.

(६) गर्भिणी को ज्यादा चिंता शोक भय आदि से बचना चाहिये.

(७) ऐसे मौके में किसी दानी और समज अनुभवी स्त्री के पास रहना अथवा पास रखनी बहुत जरूरी है.

(८) गर्भिणी स्त्री को धर्म ध्यान करना दान मान आदि देना, नैतिक आदि उत्तम २ २ विषयों की पुस्तकें देखना अथवा सुनना सदा आनन्दित और प्रफुल्लित वदन रहना उच्च और शुभ विचार में मन को बहलाना इत्यादि शुभ २ कार्यों के तरफ लक्ष बढ़ना चाहिये. क्योंकि जैसा लक्ष माता का होता है वैसा ही संस्कार बालक के हृदय में प्राप्त हो जातें हैं.

(९) गर्भिणी स्त्री को प्रसव के लिये जिन २ पदार्थों की जरूरत हो उनको संग्रह

पहले कर रखना चाहिये जिससे वक्त पर तकलीफ नहीं उठाना पड़े.

(१५) गर्भिणी अवस्था में सन्तान रक्षा के लिये जितनी सावचेती रखनी कही उस से भी ज्यादा सावचेती और निगाह प्रसव होने बाद बालरक्षा व शिक्षा पर रखनेकी है

(१) बालक को असावधानी से अकेला छोड़ना नहीं किन्तु सावधानी से पोषण करना क्योंकि उसवक्त बालक को माता का ही आधार है.

(२) बालकों को अनेक आधि व्याधियों में अपना बालपणा गुजारना पड़ता है जिससे अनेक वख्त कुछ न कुछ पीड़ाएं रहा करती है उस वख्त घवरा कर किसी जाणकार को दिखाये बिना एक दम ज्यादा गर्मी सर्दी देना नहीं.

(३) बालकों को स्तन पान भी नियमसर कराना चाहिये वार २ कराने से आदत बिगड़ती है और सोती २ पिलाने से बालकों के कान बहने का भी भय है.

(४) वालक को कच्ची नींद में जगाना भी हानिकारक है.

(५) वालक के पेशाव पाखाने की भी संभाल वख्त सर करते रहना, जिससे नियमसर निपट जावे और कपड़े खराव नहीं करे.

वहुतसी आलसु स्त्रियें मारे नींद के वार २ खवर नहीं लेनेसे वालक विछोने में शौच करदेता है जिससे उसका स्वास्थ्य विगड़ता है और आपको ज्यादा तकलीफ उठानी पड़ती है.

(६) वालक का स्वभाव है कि वह रुदन करे जिससे वहुतसी स्त्रियें उनको संभाल कर हिफ़ाजत करने के वदले अपनी मुसीवत टालने के वास्ते अफीम आदि जहरीली चीजें खिलाये करती हैं इस से वालकों की प्रकृति विगड़ती है और भविष्य में वह नाहिम्मत और सुस्त रहता है.

(७) बालकों की रक्षा के लिये माता को अपनी रसेन्द्री काबू में कर अपथ्य पदार्थों का परित्याग करना चाहिये जिससे अपना स्वास्थ्य न बिगड़े.

(८) वार २ ठंडे पानी से न आप स्नान करें न बालक को करावें.

(९) बालक के और आपके वस्त्र साफ रक्खें और सर्दी गर्मी से बचाव करनेवाले रखने चाहिये.

(१०) बालक का यह स्वभाव होता है कि जो वह देखता है उसपर झपट कर पकड़ लेता है और मुंह के लगाता है वास्ते नुकसान कारी चीजें बिखरी हुई रखना या चाकू कैंची आदि शस्त्र रखना बहुत ही हानिकारक है।

(११) जब बालक कुछ २ तोतली जबान बोलता है तो माता पिता अथवा दूसरे लोग उनको गालियें या अनुचित बोलना सीखला कर जब यह तोतली जबान से बोलते हैं तो खुशी

होते हैं यह उनकी पूरी भूल है परिणाम में यह लाड़ बहुत ही हानिकारक है. बड़ी उम्र में यह सब को बुरा लगता है. वास्ते तुम खुद न सिखलाओ और दूसरे सिखलाते हो तो मना कर दीये करो व बालक कभी ऐसी तरह बोले तो धमका कर यह आदत छुड़ादो।

(१२) कई स्त्रियें धमकाने के लिये अनेक प्रकार के भय उनके कोमल हृदय में डालती है जिससे वह हमेश भीरू और नाहिम्मत बना रहता है वास्ते ऐसे भय से उनको बचाना चाहिये.

(१३) पैसे व किसी चीज के लिये भी बालक को ऐसा मत हिलाओ जो तुम को हर जगह और वक्त तकलीफ देवे तथा आगे पर तुम को भारी पड़े.

(१४) बालक को हमेश विनय नम्रता लघुता सत्यता दयालुता मीलनसार इत्यादि उतम २ गुण तरफ उनका लक्ष बढ़े ऐसा शिक्षण देती रहो.

(१५) जबतक बालक स्कूल में जाने लायक न हो वहां तक उसको घर में ही ऐसे खिलोने से खिलाओ जिससे सहज में उनको अक्षर का बोध होजावे।

(१६) संगति भी बालक के हृदय में अनेक तरह की परिवर्तन करती है वास्ते संगति ऐसे बालकों की करना चाहिये जो उच्च जाति कुल का और सदा चारी हो परन्तु उत्तम कुल का वालक भी क्रोधी कपटी झूठा हठागृही और अवनीत हो तो उनकी संगत से बचाना।

(१७) बालकों में झूठ या पराई चीज लेने आदि का जो कोई दुर्गुण प्राप्त हुवा देखे तो ज्यादा मार ताड़ नहीं करते हुवे समजूतव धम की देकर वह दुर्गुण तुरन्त छुड़ादो।

(१८) बालकों को पढ़ने के लिये ऐसी स्कूल में भेजो जहां के अध्यक्ष (मास्टर) लोग सदाचारी गुणवान धर्म की श्रद्धा वाले व ज्यादा लोभी नहीं हो।

(१६) बालकों को संसारिक शिक्षण के साथ २ धार्मिक और नैतिक शिक्षण भी अवश्य देओ जिससे भविष्य में वह जातिकुल की मर्य्यादा और धर्म को कायम रक्खे।

बहुत सी स्कूलों में संसारिक व्यवहारिक शिक्षण दिया जाता है परन्तु धार्मिक ज्ञान नहीं मिलता है जिससे वह धार्मिक शिक्षण से बेनसीब रहते हैं और बिना धार्मिक नैतिक शिक्षण के वह विद्या फलीभूत नहीं होती न जातिकुल की मर्य्याद कायम करकर धर्म का आराधन करसके वास्ते धार्मिक पाठशालाओं में भी बालकों को अवश्य भेजना चाहिये।

(२०) केवल स्कूलों में भेज कर ही निश्चिंत नहीं रहना चाहिये किन्तु खुद को भी संभाल करनी चाहिये और अच्छे २ कपड़े व आभूषण आदि बनाकर उनका मन विद्याभ्यास में ज्यादा लगे ऐसा करना चाहिये

(१६) जब घर में तुम्हीं बड़ी होवो और पांच मनुष्य तुमारे तावे में हो तो उन पर प्रेम पूर्वक मायालुता बताओ और उनका निभाव करो जो कुछ वे कसुर में आवे तो समजूत देकर ऐब निकाल दो परन्तु जो उन को नहीं निभाओगी और तनिक २ बाव-तों में उनको छेडोगी व तुमारे हक सिवा-उनकी खानगी बावतों में हाथ डालोगी, तो तुमारे काबु में नहीं रह कर तुमारी उ-पेक्षा करेंगे वास्ते जो तुम उनको अपने काबु में रखना चाहो तो सहनशील हो-कर विश्वास और मायालुता का वर्ताव करो यही एक वशीकरण मंत्र है इससे वह खुद तुमारे अधिन होकर आज्ञा का पालन करेगा।

(१७) संसार के हरेक कार्यों में उदारता, धैर्यता, दयालुता आदि नैतिक वर्ताव के साथ परोपकारी बन कर तुमारी जिन्दगी सफल करो और तुमारी पूर्व काल में जो महिमा और प्रतिष्ठा थी वह पीछी प्राप्त कर

के आर्य महिलाओं की सर्वोच्चता का झं-
डा जगत विख्यात करो ।

नैतिक धर्म से संक्षेप में विवेचन किया है तदनुसार प्रवृत्ति करने वाली स्त्रियों को अपन आत्मिक धर्म की उन्नति करके आ-त्मिक सुखों को प्राप्त करने के लिये भी प्रवृत्ति करना उचित है ।

आत्मा का निज धर्म अनंत ज्ञान दर्शन चारित्र और वीर्य्यमय होकर अपने ही स्वभाव में रमण करे उसको कहते हैं वह अपने में सेना रूप है परन्तु कर्म रूप वद्दलों के आच्छादन से अदृश्य हो गया है अतः कर्म रूप वद्दलों को दूर करने की साधन की विधि अनेक प्रकार की है जिस में से संक्षेप मात्र कुछ रीति यहां दर्शाता हुं ।

(१) धर्म क्रिया के साधन के पहले उस विधि तथा विधि के वताने वाले तरफ श्रद्धा दृढ होने की आवश्यक्ता है क्योंकि श्रद्धा धर्म रूप महल की नीम है आज कल इस वात का वड़ा भिन्न भाव

होकर सब अपनी २ तानते हैं परन्तु नीति निपूण स्त्रियों को सत्यदेव सत्य गुरु सत्यधर्म व सत्य शास्त्र की परीक्षा करके अपनी सम्यक्त्व को दृढ करना चाहिये अब सत्यदेव सत्यगुरु सत्य धर्म वगैरा किनको मानना उनके खाश लक्षण निष्पक्षपात से दिखाता हूं

"सांचे देव सोही जामे दोष को न लेश कोई,
सांचे गुरु जाके डर काहुकी न चाहरे।
सांचा धर्म सो ही जामे करुणा प्रधानकही,
सांचे शास्त्र आदि अंत एक सो निवाहरे।
यही जगरत्न चार इनकु परख यार,
वाकीले झुटे डार नर भव को लाहोरे।
मनुष्य जन्म पाय पशु के समान गिनाते,
यह बात ठीक पारजसिलाहरे॥

विशेष लक्षण आगे देखो।

(२) धर्म के प्रवर्तक श्रीवीतराग सर्वज्ञ ज्ञान दर्शन, चारित्र, वीर्य्यरूप, अनंत, चतुष्टय रूप लक्ष्मी जिन को प्रगट हुई है ऐसे परमात्मा का हमेशः स्मरण करना

चाहिये, ऐसे परमात्मा इस अवसर्पिणी काल में २४ तीर्थंकर महाराज हुये हैं और वर्तमान में श्री सिमंधरादि २० तीर्थंकर तथा केवली भगवंत विद्यमान है जिनका व सकल कर्मों का क्षय कर के अक्षय सुख को प्राप्त किया है ऐसे सिद्ध परमात्मा का स्तवन, छंद, स्तोत्र, जाप आदि से बने जितना गुणोत्कीर्तन व स्मरण करना चाहिये।

(२) धर्म के प्रचारक मुनिमहात्मा जो केवल परोपकार के लिये खुद अनेक प्रकार के कष्ट सहन करते हैं और संपूर्ण अहिंसा सत्य दत्तशील अकिंचन रूप पंच महावृतों को धारण करके देशान्तरों में पर्य्यटन करते हैं और जिन में अचाई, सच्चाई, न्यायी बेपरवाई और अमायी ये लक्षण पाते हैं ऐसे महानुभावों के दर्शन करना, व्याख्यान वांणी श्रवण करना, घर पर पधारे तो बहुमान देकर भक्तिपूर्वक आहार पाणी

वस्त्र पात्र देना, तथा उनके स्थान पर जाकर रीति पूर्वक ज्ञान ध्यान सीखना।

खेद की वात है कि वहुत सी वनिताएं जब घर में विवाहादिक प्रसंग पर व व्याही जमाई के आने पर अपने सासु, सुसरा, ज्येष्ठ, पति आदि वड़ीलों के समक्ष वढ़ २ कर गालिया व अयोग्य गीत गाय २ कर वड़ी खुश होती है और जव गुरु देव महाराज घर पर पधारें तो मारे लाज के उठ कर आदर सत्कार भी यथायोग्य नहीं देती यह उनकी कितनी भारी भूल है उनको चाहिये कि ऐसे आत्मिक कार्य्यों में लज्जा नहीं करते हुवे अधर्म और पाप के काम में लज्जा ज्यादा करे।

(४) धर्म्म पर कायम रहने और आत्मिक धर्म को प्राप्त करने का मार्ग (साधन) ज्ञान है वास्ते हरेक शुशीला को गुरू समीप से अथवा पाठशाला आदि ज्ञान प्राप्ति के साधन रूप संस्थाओं से धार्मिक ज्ञान अवश्य सीखे क्योंकि

ज्ञानी की एक घड़ी अज्ञानी (मूर्ख) की जिन्दगी से भी अधिक है वास्ते ज्ञानाभ्यास करके आत्मा को स्थिर करना ।

(५) ज्ञान सीखने का सार यह है उसका मनन करके आश्रव से आत्मा को छुड़ा कर संवर गुण की वृद्धि के लिये संवर सामायिक, पोषह, प्रतिक्रमण, त्याग, पच्चरकाण वृत आदि यथाशक्ति वनेसो धर्मकरणि अवश्य करना क्योंकि दिन रात के २४ घंटा अथवा ६० घड़ी वीतती है इस में से कम से कम १ घंटा तो इस काम के लिये निकालना चाहिये ।

(६) धर्मकरणि के साथ विवेकी होना यह भी वहुत जरूरी है क्योंकि विवेकवान थोड़े कष्ट से वहुत लाभ प्राप्त कर सक्ते हैं ।

यहां कहना पड़ता है कि वहुत सी धर्म क्रिया की क़रने वाली श्राविकाएं

सांसारिक घर के कार्य्यों में विवेककम रखती है किन्तु वह भी काम विवेक और यत्न पूर्वक किये जायं तो सहज में अनेक त्रस जीवों की महान् रक्षा का लाभ प्राप्त कर सके और चतुर कहलावे वास्ते नीचे लिखी बातों पर ध्यान देने की सूचना देता हूं।

(१) अपने मकानों को ऐसे साफ रक्खो और हरवख्त नीगाह करती रहो जिससे जाले माले वगैरा न जमे न जीवों की उत्पति हो, कदाचित जीवों की उत्पति हुई मालुम होवे तो अयत्ना से जीवों की हानि हो ऐसा कभी न करो।

(२) पाणी लाने, छानने या वापरने में जीवाणी के पुरे यत्न करो व मटके ऐसे साफ रक्खो जिस में निगोदीये जीव (फूलन) की उत्पत्ति न हो, देखने में आता है

कि बहुत से धनाढ्य घरों में इस की बहुत बेपरवाई है क्योंकि यह काम सेठाणियें तो करती नहीं नोकरों के हाथ रहता है उनको क्या गरज जो वे इतनी दिल चस्पी रखे परन्तु वे मालकनियें यदि थोड़ी ध्यान देवे और पूछ-ताछ करे या कोई २ वख्त काम करते वख्त पास में खड़ी रहवें तो बहुत कुछ लाभ सहज में प्राप्त कर सके।

(३) रसोई का काम भी उपयोग से करने में बहुत से जीवों के प्राण बच सके, वास्ते हरेक श्राविकाओं को चाहिये कि चुल्हा वगैरा पर छत में चंद खार रक्खे सिवाय आरम्भ करने के पहले चुल्हा वेवणी को देख लेवें कोई जीव तो नहीं है तथा लकड़ी छाणे आदि इधण भी देख पुंज झाटक

लेना चाहिये इसी तरह पकाने की वस्तु साग नाज वगैरा को देख लेना चाहिये जिससे शारीरिक व परमार्थिक दोनों लाभ प्राप्त हो।

(४) घर की हरेक वस्तु को हर वक्त संभाल कर देख रेख करने से न जीवों की उत्पत्ति हो न चीज विगड़े कदाचित कोई वस्तु में जीव पड़ जावे तो अयत्न से झाटका फटकारा न लगावे किंतु विवेक से काम लिया जावे।

(५) घी, गुड़, शक्कर, तेल, दूध आदि हरएक रसवाली चीजों के वासण व दीपक आदि के यत्न करने से नुकसान से भी बचोगी और कई तरह के प्राणियों की रक्षा होगी.

(६) वोलचाल में भी विवेक की वहुत जरूरत है वहुतसी अविवेकी स्त्रियें कलह और वहुत अनर्थों की पात्र

होजाती हैं तुम्हारी सब कीमत इस वचन में है वास्ते हरएक श्राविका को चाहिये कि वे असत्य अनर्थकारी अप्रिय और विना मौके बोलने का पूरा विचार रक्खें.

(७) तुम अपने सम्बन्धियों के दुःख सुख में जाओ वहां भी विवेक की पूरी जरूरत है क्योंकि कई अविवेकी स्त्रियें ऐसी बातें कर देती हैं जिससे उनका कुछ शांत हुवा हृदय पीछा शोकातुर होकर चिन्ता के समुद्र में प्रवेश करजाता है-इत्यादि बहुतसी बातें ऐसी हैं कि विवेक पूर्वक करने से जीवों की रक्षा होवे, पाप कम लगे, आप खुद को द्रव्य भाव दोनों लाभ हो, सुगड़ कहलाओ, और जैन-धर्म का प्रभाव दीपे.

(७) आर्य्य भगिनीओ! तुम सत्यवादी बनो क्योंकि तुम्हारे श्राविकापने की प्रतीत

दिलाने व धर्म को दृढ़ बनाने में खास इस की जरूरत है सत्य बोलने में कदाचित कुछ कठीन ना मालुम देगा परन्तु परिणाम में बहुत ही फायदा है हमेश के लिये उसकी प्रतिष्ठा जम कर विश्वास की पात्र होजानी है जिसके अनेक दाखले हैं परन्तु पुस्तक नहीं बढाने के आशय से नहीं दिये हैं।

(८) आज कल बहुत सी स्त्रियें अभण और अशिक्षित होने से ऐसा सामायिक जैसे आत्म समाधि के वख्त में भी घर की, परिवार की, समाज की, सहर की व जगत् की अछती व छती सावद्य व निर्वद्य का कुछ विचार न रखते गप्प गोल चलाती और वक्त को पुरा करती है ऐसी स्त्रियें कैसे सत्यवादी होसके परन्तु श्राविकाओं को चाहिये कि तुम साधारण भी ऐसी गप्पें व विकथाएं न करो और आत्म समाधि के समय तो तुम खुद बांचसको तो ऐसे ग्रन्थ

पढ़ो जो नहीं बाच सको तो गुरू गुराणी या वड़ो की समीप से ज्ञान सीखो अथवा श्रवण करो और कुछ भी जोग नहीं लगे तो परमेश्वर के जाप करो और मोज करो ।

(६) सत्य को चाहने वाली श्राविकाओं को दूसरे की चुगली निन्दा कलहकारी भाषा व कलंक लगाना इन अवगुणों से हमेश दूर रहना चाहिये क्योंकि यह अवगुण बाह्य में मनुष्य की और अन्दर में आत्मगुणों की घात करने कराने वाले हैं स्त्री जाति को स्वभाव से ही यह ऐवं विशेष होती है कि जरा २ सी बातों पर तुरन्त ऐसा साहस कर लेती है परन्तु बादमे खुद को ही पश्चाताप करना पड़ता हैवास्ते ज्ञान वल से अपनी प्रकृति को काबु में लाकर इन अवगुणों को छोड़ दे.

(१०) आत्मसमाधि व आत्मिक धर्म साधने के ४ मुख्य भेद हैं दान, शील, तप,

और भाव. उनको आराध कर तदनु-
सार वर्ताव करना प्रत्येक श्राविका का
परम कर्तव्य है.

(१) दान यह मनुष्य का रूप है जि-
तनी प्रशंसा उदार चित्त दानेश्वेरी
कि होती है उतनी कोड़पति
की भी नहीं होती लक्ष्मी किसी
के पास न रही और न रहती
है परन्तु इस से जो कुछ सुकृत
करलीया जावे वही तुमारा है
वास्ते.

(१) जब कभी कोई महात्मा
अपने घर पर पधारे तो
उनको आहार वस्त्र पात्र
आदि सामग्री निर्दोष हाजिर
हो वह अवश्य भक्ति पूर्वक
देओ.

(२) जो कोई स्वधर्मी अपने यहां
आवे तो आदर सत्कार
पूर्वक अपने से बणे सो
वात्सल्यता करना,

(३) आहार वस्त्र नगदी के दान से भी विद्या दान श्रेष्ट है अतः विद्या की वृद्धि तरफ भी अपनी लक्ष्मी का सदुपयोग करो.

(४) जीवों की दया करना मरते हुवे को बचा कर प्राण दान देना यह सब दानों में श्रेष्ट है वास्ते ऐसे कार्य्य में बणे सो अवश्य खर्च करो.

(५) अपने कुटुम्ब में जाति में देश में और धर्म में जो कोई निराधार अजीवीका रहित हो उनकी संभाल लेकर सहायता पहुंचाओ.

(६) कोई भी अभ्यागत अतिथी घर पर आवे तो उसकी आत्मा का संतोपना यह श्रावक का धर्म है.

(७) अनेक प्रकार के पशु पक्षी जो हिंसा वृत्ति नहीं करते उसकी आत्मा को भी पोषने के लिये सहायता करना.

(२) शील तो स्त्रियों का खाश स्वरूप और आंतरिक भूषण है, चाहे जितना रूप व वस्त्राभूषण करके सज्जित स्त्री से भी शीलवान साधारण स्त्री अधिक शोभती है शीलवती स्त्रियों को देवता भी नमन करते हैं. और सब प्रकार के संकट स्वतः नाश होजाते हैं कोई भी सती पर उपद्रव नहीं करता व करे तो निष्फल होजाता है परमात्मा ने इस रत्न को ३२ ओपमा देकर श्रेष्ठता दिखलाई है वास्ते स्त्रियों को रक्षणा के वास्ते हमेशः सावचेत रहकर नीचेलिखी बाबतों पर ध्यान देना उचित है.

(१) जिस स्त्री अथवा पुरुष का चाल चलन दुरुस्त नहीं हो. उनके साथ बात करना बैठ जाना आदि कोई भी व्यवहार करना नहीं.

(२) जिन स्त्री पुरुष का परिचय (जाण पहिचान) नहीं उन की भी संगति करना नहीं.

(३) जिन स्त्री अथवा पुरुषों से कोई रिश्तेदारी या सम्बन्ध न हो वह मीठे बोले या आवे जावे तो उन पर भरोसा करना नहीं.

(४) कोई भी अन्य पुरुष (चाहे सम्बन्धी भी क्यों न हो) से हांसी मजाक करना नहीं.

(५) कुलवान् स्त्रियों अपने मुंह से अपनी जातिकुल नीति और धर्म को बाधा करे.

ऐसे गीत गाल गाना नहीं और वर्णे जहांतक ऐसा गाने वाली से अलहदा रहना * और उनको उत्तेजन देना किन्तु वोध देकर समझाना चाहिये.

(६) कपड़े गहने भी ऐसे पहनों जिससे तुम्हारी लज्जा वनी रहे और लोक उंगली से न दिखावे.

(७) सभा के वीच में (वहुत लोगों में) नाचना व हाव-भाव करना यह भी कुलवान् स्त्रियों को अनुचित है.

*नोटः—आजकल इस देश में यह चाल वहुत वढरही हैं. वहुत स्त्रियें गली, वाजार, घर वगैरा ठिकानों का कुछ भी खयाल नहीं रखते हुवे व्याही के घर सड़क पर खड़ी रहकर ऐसे शब्दों में गाती है तो कुलवान् पुरुषों को सुनने में लज्जा प्राप्त होती है. और वर्ण के मनुष्य वड़े हंसते हैं. हे परमात्मा उस वक्त लज्जादेवी उनके घर से कहां भाग जाती है.

(३) तप भी शील की रक्षा व आत्मा को शुद्ध निर्मल करने का साधन है. वास्ते श्राविकाओं को तप भी शक्ति अनुसार अवश्य करना किन्तु एक अहार छोड़ने में ही तप है ऐसा नहीं जानना. तपस्या बारह प्रकार की कही है सिवाय शम, दम, खम, सज्झाय, ध्यान, यह भी तप के भेद हैं सिवाय तप से विशेष लाभ यह है कि जो रोग अनेक औषधियों से नहीं जाते वह उपवासादिक से नष्ट हो जाते हैं ऐसा अनेक विद्वान डाक्टरों का व वैद्यों का मत है एक इंग्रेज ने इस वास्ते ४० उपवास (४० का थोक) किये थे।

(४) भाव आत्मा के निज स्वरूप को प्रगट करने का खास मार्ग है यह बगैर कषाय की मंदता

ज्ञान का बल और सम्यक्त्व की नीम के साधन होना कठिन है परन्तु आत्मिक धर्म का प्रगट करने की इच्छा वाली श्राविक ललनाओं को इन साधनों को प्राप्त करने की खप करके निम्न-लिखित बाबतों पर मनन कर प्रवृति करना और रागद्वेष की प्रणाति से आत्मा को बचाना, कदाचित् इतना करते हुवे भी रागद्वेष की लहरे उत्पन्न होजावे तो ज्यादा काल तक रखना नहीं और समभाव को भजते रहना.

(१) जिस वख्त धर्म ध्यान कुटुम्ब परिवार रिद्धि समृद्धि इज्जत आबरू ज्यादा बढ़जावे उस वक्त गर्भ में और छकना नहीं व किसी को हलका मर्मकारी व अपमान कारक बचन कहना नहीं.

(२) जिस वख्त धन का च्चय हो जावे कुटुम्ब परिवार में वि· च्छेद हो जावे मान सन्मान घट जावे दूसरे लोग निरा- दर करे उस वख्त चिन्ता करके आत्मघात करना नहीं, दूसरों पर द्वेष करना नहीं, व कोई का बुरा चिं- तवना नहीं।

(३) अपने धर्म कर्म में व त्याग पचरकाण निभाने में मनु- ष्य देवता के कष्ट को भी सहन करके किन्तु दृढ रह- ना चाहिये. थोड़ी सी मु- श्किली में या कोई के साथ तकरार हो जावे उस वख्त में अथवा कोई के डिगाने पर इसी तरह लोभ में आ कर धर्म कर्म छोड़ना नहीं ऐसे मामलों में बहुत लोग

छोड़ देते हैं वे दोनों लोक
से जाते हैं। ❀

(४) अपने धर्म में किसी ने उद-
य भाव अशुभ कर्म के
जोर से अनुचित काम कर
लिया हो तो उस एक के
तरफ दृष्टि करके धर्म को
ऐसा नहीं मानना और ध-
र्म तरफ से प्रणाम नहीं
हटाना इसी तरह मिथ्या
मत का आडम्बर तथा प्र-
वाह बढे उस वख्त अपने
निज धर्म से घृणा करना

नोट—कई बालिकाओं के माता पिता लोभ या किसी कारण से अन्य धर्मी के यहां व्याह देते है उस वख्त सासरावालों की धमकी या दवाव से अपने आत्मिक धर्म को नहीं छोड़ें किन्तु उनके परिसह सहन करके अपने धर्म में कायम रहना. देखो आगे सुभद्राजी सीताजी वगैरा अनेक सतीयें ऐसी हो गई है जिनों ने उनके परीसह को सहन किये परन्तु धर्म पर कायम रही और उनको भी वोध दिया।

नहीं किन्तु प्रणामों को
धर्म में दृढ बनाना ।

(५) श्राविकाओं तुम हमेश अपने हृदय में यह प्रार्थना करती रहो कि श्राविका वर्ग का किस तरह कल्याण हो वे अपनी भूली हुई स्थिति को पीछी प्राप्त करे ऐसी सहायता करती रहो तथा नवीन श्राविका धर्म प्राप्त करने वाली स्त्रियों को सुशिक्षा देकर उनको धर्म में दृढ बनाओ ।

(११) आत्मिक धर्म आराधने के हरेक कार्यों में अपना तन, मन, धन अर्पण करके शीघ्र अपने सच्चे आत्मिक धर्म में प्राप्त होय अक्षय सुखों की अधिकारी बनो ।

इस प्रकार नैतिक व आत्मिक धर्म का स्वरूप संक्षेप में लिखा है जोकि यह सूच-

नाएं विद्वता युक्त नहीं है परन्तु विद्वानों के हास्य रूप मालुम देगा परन्तु मेरी अशिक्षिता आर्य्य भगानियें जो इस पुस्तक को पठन करके मनन करेगी और तदनुसार वर्ताव करके अपनी स्थिति को परिवर्तन करेगी तो मैं अपने श्रम को साफल्य समझूंगा।

विद्धज्जनों से प्रार्थना है कि कोई भी सार्वजनिक लेख लिखने का अथवा पुस्तक रचने का अवसर प्राप्त हुवा हो तो यह पहला ही है व मेरी अवस्था ज्यादा न होने से सब तरह का अनुभव भी मुझे पूरा नहीं होने के कारण भूलें रह जानेका सम्भव है किन्तु आप के नजर में जो कोई भूल या अनुचितता नजर आवे तो क्षमा करके मुझे सूचना करने से मैं आप का आभार मानूंगा।

इत्यलम् ॥